

#29 अंतरधर्मी विवाहोपरांत मेरिज एक्ट चुनने की शक्ति

(Power to Decide Marriage Code after Marriage)

भारत में विविध धर्मों के लिए भिन्न विवाह कानून लागू है। इनमें कुछ धर्मों के विवाह कानून महिलाओं को मजबूत संरक्षण प्रदान करते हैं जबकि कुछ धर्मों के विवाह कानून में महिलाओं को पर्याप्त संरक्षण नहीं है, और इस वजह से उन महिलाओं की स्थिति विवाह के बाद कमजोर हो जाती है, जिन्होंने किसी अन्य धर्म के युवक से विवाह किया है और अमुक युवक के धर्म का विवाह कानून महिलाओं को पर्याप्त सुरक्षा नहीं देता। यह कानून अंतरधर्मी विवाह करने वाली महिलाओं को विवाह के उपरान्त वैवाहिक झगड़ों के निपटान के लिए अपने जन्मना धर्म का कानून चुनने की शक्ति देता है। हेश कोड : **#DecidingMarriageCode**



(1) वैवाहिक विवादों की दशा में विवादों का निपटान किस धर्म के वैवाहिक कानून के तहत किया जाएगा इसका फैसला लेने का अंतिम अधिकार विवाहित महिला के पास होगा। महिला विवाह के उपरान्त किसी भी समय अदालत में एक शपथपत्र प्रस्तुत कर सकेगी कि उसके विवाह का निस्तारण निचे दिए गए किस कानून के तहत किया जाना चाहिए :

1. उस धर्म के वैवाहिक कानून के तहत जिस धर्म में विवाहित महिला ने जन्म लिया था, या
2. उस वैवाहिक कानून के तहत जिसके तहत दम्पति ने विवाह किया था।

स्पष्टीकरण : मान लीजिये कि A एक जन्मना हिन्दू महिला है, जो B नामक मुस्लिम युवक से विवाहित है, तथा विवाह के दौरान या विवाह के उपरांत मुस्लिम धर्म में धर्मान्तरित भी हो चुकी है। तब भी वैवाहिक विवाद होने की स्थिति में A यदि मामले का निपटान हिन्दू मेरिज एक्ट के तहत चाहती है तो मामला हिन्दू एक्ट के तहत सुना जाएगा। A द्वारा हिन्दू मेरिज एक्ट लागू कर दिए जाने पर मुस्लिम युवक ट्रिपल तलाक द्वारा जन्मना हिन्दू महिला को तलाक नहीं दे सकेगा, और डिवोर्स हिन्दू मेरिज एक्ट के तहत अदालत के आदेश के अनुसार ही होगा। और चूंकि हिन्दू मेरिज एक्ट में बहु विवाह की अनुमति नहीं है, अतः B यदि A को डिवोर्स दिए बिना दूसरी शादी करता है तो B को हिन्दू मेरिज एक्ट के तहत आपराधिक मुकदमें का सामना करना पड़ सकता है। यदि B, A का उत्पीड़न कर रहा है तो A अदालत में B एवं B के पारिवारिक सदस्यों के खिलाफ धारा 498A के तहत आपराधिक मुकदमें कायम करवा सकेगी।

(2) यह कानून पूर्ववर्ती प्रभाव के साथ लागू होगा। अर्थात् इस कानून के लागू होने की दिनांक से पूर्व संपन्न हुए सभी विवाह भी इस कानून के दायरे में आयेंगे, और सभी अंतरधर्मी विवाहों पर यह कानून लागू होगा।

(3) यदि पहले से मौजूद किसी अन्य प्रवृत्त कानून की कोई धारा इस कानून में दिए गए किसी प्रावधान का उलंघन करती है, तो इस कानून के गेजेट में प्रकाशित होने के साथ ही अन्य प्रवृत्त कानून की ऐसी समस्त विपरीत आशय दर्शाने वाली धाराएं विधि शून्य मानकर निस्त की जाती हैं।

पूरा ड्राफ्ट यहाँ देखें- [Tinyurl.com/DecidingMarriageCode](https://tinyurl.com/DecidingMarriageCode)